आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 11. 5. 2025

रविवार

अंक : 41

वैशाख सुद - 14

आनंदराज की कलम

" भरोसे की चुभन : दिल से दिल तक का सफर "

वो हँसते रहे मेरा हाल देखकर,
हम रोते रहे उनका कमाल देखकर।
भरोसा था जिन पर खुदा से ज़्यादा,
वो तोड़ गए दिल, मज़ाक बनाकर वफ़ा का नाम लेकर।

जब कोई आपका विश्वास तोड़ता है, तो यह बहुत तकलीफदेह हो सकता है। ऐसे समय में भावनात्मक संतुलन बनाए रखना और सोच-समझकर कदम उठाना जरूरी होता है।

1. शांत रहें और प्रतिक्रिया से बचें – गुस्से में आकर कोई बड़ा कदम न उठाएं, पहले खुद को संभालें।
2. भावनाओं को स्वीकारें – दर्द, गुस्सा, निराशा जैसी भावनाओं को दबाएं नहीं, उन्हें महसूस करना जरूरी है।
3. समय लें – किसी भी निर्णय के पहले खुद को थोड़ा वक्त दें ताकि सोच साफ हो सके।
4. कारण समझने की कोशिश करें – अगर मुमकिन हो तो बात करके जानें कि विश्वासघात क्यों हुआ।
5. सीमाएं तय करें – भविष्य में फिर से ऐसा न हो, इसके लिए सीमाएं और स्पष्ट नियम बनाएं।
6. खुद को दोष न दें – दूसरे के गलत काम के लिए खुद को दोष देना सही नहीं।
7. अपनों से बात करें – जिन पर आप भरोसा करते हैं उनसे अपनी बात साझा करें, इससे मन हल्का होगा।
8. स्वस्थ प्रतिक्रिया दें – बदला लेने या अपमान करने के बजाय समझदारी से व्यवहार करें।
9. सीखें और आगे बढ़ें – अनुभव से सीखें कि भविष्य में ऐसे हालात से कैसे निपटना है।
10. माफी दें (यदि संभव हो) – माफ करना आपके लिए ही शाति ला सकता है, भले ही आप रिश्ता न रखें।
11. रिश्ते का पुनर्मूल्यांकन करें – सोचें कि यह रिश्ता आपके लिए कितना जरूरी है और इसमें सुधार संभव है या नहीं।
12. स्व-देखभाल करें – अपने मन और शरीर की देखभाल करें: ध्यान, व्यायाम, रचनात्मक गतिविधियाँ अपनाएं।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

विश्वास एक काँच की
तरह होता है !
एक बार टूट जाए तो ,
चाहे जोड़ भी लो ,
दरारें रह ही जाती हैं।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 189

स्त्रियों का सच्चा शणगार क्या है ???

(1) हार
(2) शियल
(3) विंटी
(4) चांदलो

प्रश्नमंच 188
जवाब (3)
वांदणा

विजेता : श्री निलम महेता

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

श्री हिमानी महेता

अमेरिका

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 12.5.2025

सोमवार

अंक : 42

वैशाख सुद - 15

आनंदराज की कलम

" प्रेम के सात रंग: रिश्तों की विविध छायाएँ "

प्रेम के अनेक रूप होते हैं, और प्रत्येक प्रकार की गहराई, उद्देश्य और प्रकृति अलग होती है।

1. एरोस (Eros) – कामुक या रूमानी प्रेम
* यह शारीरिक आकर्षण और रूमानी भावनाओं से जुड़ा प्रेम है।
* इसमें लालसा, रोमांच और भावनात्मक उत्तेजना होती है।
* यह प्रेम आमतौर पर रिश्तों की शुरुआत में प्रबल होता है, लेकिन समय के साथ इसमें परिपक्वता आनी चाहिए । वरना नुकसान दायक है ।

2. फिलिया (Philia) – मित्रता या आत्मीय प्रेम
* यह गहरी दोस्ती और परस्पर सम्मान पर आधारित होता है।
* इसमें भावनात्मक सहयोग, भरोसा और समानता होती है।
* भाई-बहन, घनिष्ठ मित्र, या सहयोगियों के बीच यह प्रेम देखा जाता है।

3. स्टॉर्ज (Storge) – पारिवारिक प्रेम
* यह माता-पिता, संतान और परिवारजनों के बीच का प्राकृतिक प्रेम है।
* यह बिना शर्त और स्थायी होता है, जो समय के साथ और गहरा होता जाता है।
* इसमें देखभाल, सुरक्षा और अपनापन होता है।

4. अगापे (Agape) – निस्वार्थ और वितरागी प्रेम
* यह उच्चतम रूप का प्रेम है जो निःस्वार्थ, करुणामय और सार्वभौमिक होता है।
* आगम ग्रंथों में वर्णित परमात्मा का प्रेम इसी प्रकार का होता है।
* जीवमात्र के प्रति करुणा, सेवा भावना और बलिदान इसी श्रेणी में आते हैं।

5. लुडस (Ludus) – चंचल और खेल-खेल में किया जाने वाला प्रेम
* यह हल्का-फुल्का, मज़ाकिया और चुलबुला प्रेम होता है।
* यह प्रेम आमतौर पर शुरुआत में होता है, जैसे फ्लर्ट करना या रोमांटिक इशारे।
* यह रिश्ते को जीवंत और रोचक बनाए रखने में मदद करता है।

6. प्रग्मा (Pragma) – व्यावहारिक और दीर्घकालिक प्रेम
* यह दीर्घकालीन प्रतिबद्धता और समझदारी पर आधारित प्रेम है।
* विवाह के बाद जो परिपक्वता, समझौता और समर्पण आता है, वह इसी श्रेणी में आता है।
* इसमें स्थिरता और विश्वास प्रमुख होते हैं।

7. फिलौतिया (Philautia) – आत्म-प्रेम
* यह स्वयं के प्रति प्रेम है – जो आत्म-सम्मान, आत्म-स्वीकृति और आत्म-देखभाल से जुड़ा है।
* यह दो प्रकार का हो सकता है:
स्वस्थ आत्म-प्रेम (जिसमें आत्म-सम्मान होता है)
अहंकारी आत्म-प्रेम (जो आत्म-केंद्रित होता है)

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

प्रेम वहीं सच्चा होता है ।
जहाँ स्वार्थ नहीं ,
केवल समर्पण होता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरि

मार्मिक प्रश्नमंच - 190

तिर्थंकर परमात्मा को अवधिज्ञान कब होता है ???

(1) गर्भ में आते समय
(2) जन्म लेते समय
(3) दिक्षा लेते
(4) केवलज्ञान प्राप्ति समय

प्रश्नमंच 189
जवाब (2)
शियल

विजेता : श्री नयनाबेन शेठ - सुरत

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
आनंदराज फैमिली

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site
अर्हम् साईट
ता. 13. 5. 2025
मंगलवार
वैशाख वद - 1
अंक : 43

आनंदराज की कलम

" शाति का संगमरमर - राणकपुर की वंदना "

संगमरमर सा श्वेत भवन, नक्काशी की शान।
तीर्थंकर की मधुर छवि, करता मन में ज्ञान।।

स्तंभों की वह गिनती क्या, सब में भिन्न रूप,
शांत पवन में गूंजती, जैसे ध्यान स्वरूप।।

धूप छाँव की ओट में, बसा है एक विश्वास,
राणकपुर का जैन धाम, करे हृदय प्रकाश।।

राणकपुर जैन तीर्थ भारत के राजस्थान राज्य में स्थित एक प्रसिद्ध जैन धार्मिक स्थल है। यहाँ की वास्तुकला, आध्यात्मिकता और इतिहास बहुत ही आकर्षक हैं।

1. स्थान : राणकपुर जैन मंदिर राजस्थान के पाली जिले में स्थित है, जो उदयपुर से लगभग 90 किलोमीटर दूर है।
2. मुख्य देवता : यह मंदिर प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) को समर्पित है।
3. निर्माण काल : मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी में राणा कुंभा के शासनकाल में हुआ था।
4. निर्माता : इस मंदिर का निर्माण एक जैन व्यापारी धरना शाह ने करवाया था, जिनको एक स्वप्न में मंदिर का दृश्य प्राप्त हुआ था।
5. वास्तुकला : यह मंदिर सफेद संगमरमर से बना हुआ है और इसमें जटिल नक्काशी, शिल्पकला और वास्तुशिल्प का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।
6. स्तंभों की विशेषता : मंदिर में लगभग **1444 अद्वितीय स्तंभ** हैं और हर स्तंभ की नक्काशी एक-दूसरे से अलग है।
7. शांत वातावरण : यह स्थान जैन धर्म के अहिंसा और ध्यान की परंपरा का पालन करता है, और यहां का वातावरण अत्यंत शांतिपूर्ण और आध्यात्मिक होता है।
8. छत की नक्काशी : मंदिर की छतों पर की गई नक्काशी, विशेष रूप से कमल के फूल और देवी-देवताओं की आकृतियाँ, दर्शनीय हैं।
9. चौमुखा मंदिर : यह मंदिर "चौमुखा मंदिर" भी कहलाता है, क्योंकि इसमें भगवान आदिनाथ की चार दिशाओं की ओर मुख वाली प्रतिमाएं हैं।
10. पर्यटन और श्रद्धालु : यह मंदिर न केवल जैन श्रद्धालुओं के लिए, बल्कि देश-विदेश के पर्यटकों के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र है।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

धर्म वही जो !
अहिंसा सिखाए ।
ज्ञान वही जो !
आत्मा तक जाए ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 191

सामायिक में जिस पर बेठे
हो उसे क्या कहते हैं ???

(1) आसन
(2) बेठक
(3) चाकळो
(4) कटासणुं

प्रश्नमंच 190
जवाब (1)
गर्भ में आते समय

विजेता : श्री सचिन कोटेचा - भुसावल

जवाब 9428913847 पर
whatsapp करें...
झो द्वारा विजेता को नाम
अर्हम् दैनिक में आयेगा
एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
आनंदराज
फैमिली

www.arhamsite.com

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site
अर्हम् साईट
ता. 14. 5. 2025
बुधवार
वैशाख वद - 2
अंक : 44

आनंदराज की कलम

" गुरुकृपा: जीवन का परम प्रकाश "

गुरु की नज़रों में जो बस गया , वो खुद से ऊपर उठ गया।
जिसने थाम लिया उसका हाथ , वो अंधेरों से भी जुड़ गया।

सच्चे " आध्यात्मिक गुरु " की पहचान करना आसान नहीं होता, लेकिन आगम शास्त्रों में गुरू के अनेक गुण बताए गए हैं जिसमें प्रमुख रूप से यह पाए जाते हैं।

1. आत्मिक अनुभव से पूर्ण हों – गुरु केवल ज्ञान की बात नहीं करते, उन्होंने आत्मा का अनुभव किया होता है।
2. निस्वार्थ भाव से कार्य करें – उनका कोई निजी स्वार्थ नहीं होता; वे केवल शिष्य के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।
3. वाणी में शक्ति होती है – उनकी बातों से मन में शाति, प्रेरणा और सत्य की खोज की भावना जगती है।
4. शाति और संतुलन का स्रोत हों – उनके पास बैठते ही मन शांत हो जाता है, जैसे कोई दिव्य ऊर्जा हो।
5. क्रोध, लोभ, अहंकार से मुक्त हों – उनका व्यवहार हमेशा विनम्र, शांत और स्नेहपूर्ण होता है।
6. गुप्त अहंकार नहीं होता – वे स्वयं को महान नहीं जताते, बल्कि ईश्वर या गुरु पर सब कुछ समर्पित कर देते हैं।
7. सभी को समान दृष्टि से देखते हैं – जाति, धर्म, अमीर-गरीब का भेद नहीं रखते।
8. शिष्य को आत्मनिर्भर बनाते हैं – वे शिष्य को अपने ऊपर निर्भर नहीं रखते, बल्कि उसे ईश्वर से जोड़ते हैं।
9. दिखावा या चमत्कारों से दूर रहते हैं – सच्चे गुरु चमत्कारों से प्रभावित नहीं करते, बल्कि साधना और सत्य की ओर प्रेरित करते हैं।
10. उनके पास समाधान नहीं, दिशा होती है – वे हर समस्या का हल नहीं बताते, बल्कि आपको सही मार्ग दिखाते हैं जिससे आप स्वयं समाधान पा सकें।
11. उनकी उपस्थिति जीवन बदल देती है – उनके संपर्क में आने से व्यक्ति के विचार, दृष्टिकोण और जीवन की दिशा बदलने लगती है।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जहाँ विश्वास होता है , वहाँ रास्ता अपने आप बन जाता है।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 192

प्रतिक्रमण करने से पहले क्या लेना होता है ???

(1) पौषध
(2) दिक्षा
(3) सामायिक
(4) बाधा

प्रश्नमंच 191
जवाब (4)
कटासणुं

विजेता : श्री निलम शाह - कृष्णनगर

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 र ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
अंक लाभार्थी बनें
मात्र ₹ 300/-

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 15.5.2025

गुरूवार

वैशाख वद - 3

अंक : 45

आनंदराज की कलम

" आध्यात्मिक मार्ग का गहरा चिंतन "

" आध्यात्मिक मार्ग का गहरा चिंतन " जीवन के उस सूक्ष्म, शांत और सच्चे मार्ग की ओर एक यात्रा है जहाँ आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने लगती है। इस मार्ग में केवल बाहरी आडंबर नहीं, बल्कि अंतर्मन की यात्रा होती है — एक ऐसा अवलोकन जो आत्मा, परमात्मा, और उनके बीच के संबंध को समझने की ओर ले जाता है। यहाँ कुछ प्रमुख बिंदु हैं जो आध्यात्मिक मार्ग के गहरे चिंतन में सहायक हो सकते हैं:

1. स्व-चिंतन और आत्मनिरीक्षण

अध्यात्म की शुरुआत स्वयं को जानने से होती है। " मैं कौन हूँ ? " — यह प्रश्न आत्मज्ञान की ओर पहला कदम है। जब व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और कर्मों का निरीक्षण करता है, तब उसे अपने अहंकार, वासनाओं और भ्रमों का बोध होता है।

2. मौन और ध्यान

मौन केवल शब्दों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि मानसिक अशाति का समाप्त होना है। ध्यान के माध्यम से मन स्थिर होता है और चित्त एकाग्र होकर अंतर्जगत की गहराइयों में प्रवेश करता है।

3. वैराग्य और त्याग

सच्चे आध्यात्मिक मार्ग में सांसारिक मोह-माया से दूरी बनाना आवश्यक होता है — इसका अर्थ यह नहीं कि संसार से भागना , बल्कि संसार में रहना पडे तो भी उसमें आसक्त न होना।

4. साक्षी भाव में रहना

'कर्तापन' के भाव से निकलकर, जीवन को एक साक्षी की तरह देखना — न भूतकाल से बंधना, न भविष्य की चिंता करना — यह वर्तमान में जीने की कला है, जो गहन शाति की ओर ले जाती है।

5. सिद्ध पद या सत्य की खोज

चाहे आप इसे परमात्मा कहें, ब्रह्म, चेतना या शुद्ध प्रेम — आध्यात्मिक यात्रा का अंतिम उद्देश्य उसी अनंत सत्य से एकत्व स्थापित करना होता है। जहां आठे कर्मों से मुक्त होना हैं।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जब मन शांत होता है..

तभी आत्मा की आवाज़ ,

सुनाई देती है !

और वही आवाज़ हमें ,

सत्य की ओर ले जाती है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 193

देरासर में कौनसी बात

नहीं हो सकती ???

(1) संसार की

(2) देरासर की

(3)पूजा की

(4) केसर - सुखड़ की

प्रश्नमंच 192

जवाब (3)

सामायिक

विजेता : श्री नरेन्द्रभाई - सुरेन्द्रनगर

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

ड्रो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

अंक लाभार्थी बनें

मात्र ₹ 300/-

www.arhamsite.com

आशीषः प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 16. 5. 2025

शुक्रवार

वैशाख वद - 4

अंक : 46

आनंदराज की कलम

" भटकते मन को साधने की आसान विधियाँ "

1. सांस पर ध्यान केंद्रित करें
* अपनी सांसों को आते-जाते हुए ध्यान से महसूस करें।
* सिर्फ 5-10 मिनट रोज़ाना यह अभ्यास करने से मन एकाग्र होता है।
2. त्राटक (Trataka) अभ्यास
* एक जलती हुई दीपक की लौ पर बिना पलक झपकाए ध्यान केंद्रित करें।
* यह अभ्यास दृष्टि और ध्यान दोनों को तेज करता है।
3. जप या मंत्र ध्यान
* किसी एक मंत्र (जैसे "ॐ" या "महावीर") का मानसिक या मौखिक जप करें।
* मन भटकने लगे तो धीरे से उसे वापस मंत्र पर लाएं।
4. वर्तमान क्षण में रहना (Mindfulness)
* जो भी काम करें, पूरा ध्यान उसी पर रखें।
* खाना खाते, चलने या बात करते समय भी पूरी उपस्थिति बनाए रखें।
5. प्रकृति में समय बिताना
* पेड़ों, नदियों, या खुले आकाश को देखना मन को स्थिर करता है।
* मन स्वाभाविक रूप से केंद्रित होता है।
6. डिजिटल डिटॉक्स
* दिन में कुछ समय मोबाइल/इंटरनेट से दूर रहें।
* इससे मन में शांति और स्पष्टता आती है।
7. बॉडी स्कैन ध्यान (Body Scan Meditation)
* शरीर के विभिन्न अंगों पर ध्यान केंद्रित करें, सिर से पैर तक।
* हर हिस्से को महसूस करें और तनाव को छोड़ें।
* यह अभ्यास मन को वर्तमान में लाता है और एकाग्रता बढ़ाता है।
8. ध्यानपूर्वक लेखन (Mindful Writing)
* रोज़ 5-10 मिनट अपने विचारों को लिखें, बिना किसी रोक-टोक के।
* इससे मन के भटकाव कम होते हैं और ध्यान केंद्रित होता है।
9. संगीत ध्यान (Meditative Music)
* शांत, बिना बोल वाला संगीत सुनें और पूरी तरह उसी पर ध्यान दें।
* यह मन को शांति और स्थिरता देता है।
10. चलना ध्यान (Walking Meditation)
* धीरे-धीरे चलें और हर कदम का अनुभव करें—जमीन का स्पर्श, शरीर की गति।
* यह अभ्यास मन को केंद्र में लाने का एक सक्रिय तरीका है।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जब मन स्थिर होता है !
तब जीवन स्पष्ट दिखता है ।
जैसे शांत जल में ,
आकाश झलकता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 194

फागुन सुदि 13 को शत्रुंजय पर
कौनसी यात्रा के लिए लोग जाते हैं ???

(1) बार गाउं
(2) छ गाउं
(3) तीन गाउं
(4) एक गाउं

प्रश्नमंच 193
जवाब (1)
संसार की

विजेता : श्री राजेश शाह - पार्ला

जवाब 9428913847 पर
whatsapp करें...
इ्से द्वारा विजेता को नाम
अर्हम् दैनिक में आयेगा
एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

अंक लाभार्थी बनें

मात्र ₹ 300/-

www.arhamsite.com

आशीषः प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 17.5.2025

शनिवार

अंक : 47

वैशाख वद - 5

आनंदराज की कलम

संघर्ष भरे छोटे कदम... बड़े सपनों की सीढ़ियाँ बनते हैं ।

"छोटे हाथ, बड़ा सपना"

छह साल का अर्जुन रोज़ सुबह अपने पिता के साथ रेलवे स्टेशन के बाहर जूते पॉलिश करता था। उसकी नन्हीं उंगलियाँ, जो खिलौनों से खेलने के लिए बनी थीं, दूसरों के जूतों की धूल साफ करने में लगी रहती थीं। स्कूल पास में था। अर्जुन अक्सर बच्चों को यूनिफॉर्म में हँसते हुए देखता, किताबें पकड़ते हुए भागते हुए। उसकी आँखों में भी चमक होती, लेकिन दिल में एक टीस।

एक दिन एक टीचर स्टेशन से गुज़रे। उन्होंने अर्जुन को देखा — वह जूता पॉलिश करते हुए गिनती गा रहा था:

"इकत्तीस, बत्तीस, तैंतीस..."

टीचर ने पूछा, "तुम पढ़ते क्यों नहीं?"

अर्जुन बोला, "पढ़ाई का टाइम नहीं होता साब, पेट पहले भरना पड़ता है। पर मैं सीख रहा हूँ... खुद से।"

अगले दिन वही टीचर एक पुराना बस्ता, कुछ कॉपियाँ और पेंसिल लेकर आए।

"अब तुम शाम को मेरे पास आकर पढ़ा करो। फीस नहीं लगेगी, बस मेहनत चाहिए।"

अर्जुन ने मेहनत की। दिन में काम, शाम को पढ़ाई। सालों बाद वह वही टीचर बना — रेलवे स्टेशन के पास झुग्गियों में बच्चों को मुफ्त पढ़ाने वाला।

वह कहता... "मैं तो बस छोटा सा सपना लेकर चला था — अब दूसरों को सपना देखना सिखा रहा हूँ।"

"कुछ बच्चे स्कूल नहीं जाते — क्योंकि उन्हें पहले ज़िंदगी पढ़नी पड़ती है।"

यह पंक्ति साधारण लग सकती है, लेकिन इसमें उन लाखों बच्चों की कहानी छुपी है जो हालातों से पहले लड़ते हैं, फिर सपनों से।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

असली मजबूती गरीबी में नहीं ,
हौसले में होती है ।
जो खुद अंधेरे में जले !
वही दूसरों को रौशनी ,
देना सीखाता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 195

अमदावाद हठीसिंह वाडी जिनालय में मूलनायक प्रभु का नाम ???

(1) शांतिनाथ जी
(2) पार्श्वनाथ जी
(3) कुंथुनाथ जी
(4) धर्मनाथ जी

प्रश्नमंच 194
जवाब (2)
छ गाउं

विजेता : श्री ध्रुव - सुरेन्द्रनगर

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

अंक लाभार्थी बनें
मात्र ₹ 300/-

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site
अर्हम् साईट
ता. 18. 5. 2025
रविवार
अंक : 48
वैशाख वद - 6

आनंदराज की कलम

:: अडिग संकल्प की शक्ति ::
" धारणा से सफलता तक "

मनुष्य की सफलता, आत्मिक उन्नति और चरित्र निर्माण में अनेक शक्तियाँ कार्य करती हैं, लेकिन इन सबमें एक शक्ति सबसे महत्वपूर्ण है । धारणा शक्ति। यह वह आंतरिक सामर्थ्य है जो किसी विचार, संकल्प या उद्देश्य को मन, बुद्धि और आत्मा में स्थिर रूप से बनाए रखने की क्षमता प्रदान करती है।

जब हम इतिहास के पन्नों को पलटते हैं, तो पाते हैं कि जितने भी महान व्यक्तित्व हुए हैं — जैसे स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, अब्दुल कलाम या नेल्सन मंडेला... इन सभी ने अपनी धारणा शक्ति का उपयोग करके असंभव को संभव किया। गांधीजी ने "सत्य और अहिंसा" की धारणा को इतने दृढ़ भाव से अपने जीवन में उतारा कि पूरी दुनिया को झुका दिया।

धारणा शक्ति हमें संकटों में भी डगमगाने नहीं देती। जब परिस्थितियाँ प्रतिकूल होती हैं, तब यह शक्ति हमें अंदर से मजबूत बनाए रखती है। यह वही शक्ति है जो विद्यार्थी को परीक्षा की तैयारी में लगातार पढ़ने की प्रेरणा देती है, एक खिलाड़ी को लक्ष्य तक पहुँचने तक थकने नहीं देती और एक साधक को ईश्वर तक पहुँचने की राह पर स्थिर रखती है।

कैसे बढ़ाएं धारणा शक्ति ???

1. नियमित ध्यान और योग : मन को एकाग्र करने की कला धारणा शक्ति को विकसित करती है।
2. सकारात्मक विचारों का अभ्यास : जैसा सोचते हैं, वैसे ही बनते हैं। सकारात्मक सोच धारणा को बल देती है।
3. संकल्प लेना और निभाना : छोटे-छोटे संकल्प लेना और उन्हें पूर्ण करना धारणा की नींव को मजबूत करता है।
4. सत्संग और प्रेरणादायक साहित्य का अध्ययन : उच्च विचारों से मन पुष्ट होता है और धारणा दृढ़ बनती है।

धारणा शक्ति कोई साधारण मानसिक अभ्यास नहीं, बल्कि यह आत्मा की एक दिव्य क्षमता है, जो मनुष्य को सामान्य से असाधारण बनाने की योग्यता रखती है। जीवन में यदि कोई लक्ष्य है, कोई स्वप्न है, तो उसे पाने के लिए केवल बाहरी प्रयास नहीं, भीतर की स्थिरता और धारणा की ज्वाला चाहिए।

निष्कर्षत :: जब आप किसी महान उद्देश्य को अपने मन में पूर्ण विश्वास और समर्पण के साथ धारण करते हैं, तो वह शक्ति आपके व्यक्तित्व को नई ऊँचाइयों तक ले जाती है। यही है — *धारणा शक्ति की प्रचंड ताकत।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जिस विचार को तुम ,
मन, वचन और कर्म से ,
दृढ़ता से धारण कर लेते हो..
वही एक दिन तुम्हारी ,
सच्चाई बन जाता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 196

पगलुंछनिया पर सुस्वागतम् लिखा हो
और पांव लग जाए कौनसा कर्म बंध होता है ???

(1) दर्शनावरणीय
(2) ज्ञानावरणीय
(3) वेदनीय
(4) मोहनीय

प्रश्नमंच 195
जवाब (4)
श्री धर्मनाथ जी

विजेता : श्री जयश्री बेन शेठ - सिरोही

जवाब 9428913847 पर
whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम
अर्हम् दैनिक में आयेगा
एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

मार्मिक प्रश्नमंच 201 से
ज्योतिष प्रवेशिका के माध्यम
से प्रश्न दिया जायेगा
जिसे पुस्तक चाहिए वह
तुरंत संपर्क करें...₹ 200/-

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा

अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site

अर्हम् साईट

ता. 19.5.2025

सोमवार

अंक : 49

वैशाख वद - द्वि. 6

आनंदराज की कलम

जब मन बोलने से डरता है ,
" संकुचिता पर चिंतन "

मानव स्वभाव अनेक रंगों से रंगा होता है। कुछ व्यक्तित्व खुले और आत्मविश्वासी होते हैं, तो कुछ अंतर्मुखी और संकोचपूर्ण। "संकुचिता" या संकोच वह भाव है जो व्यक्ति को अपने विचार, भावनाएँ या क्षमताएँ स्वतंत्र रूप से प्रकट करने से रोकता है। यह मानसिक अवस्था न केवल व्यक्ति की आत्म-अभिव्यक्ति में बाधा बनती है, बल्कि उसके विकास के मार्ग में भी रुकावट पैदा करती है।

संकुचिता के कारण

संकुचिता के कई कारण हो सकते हैं –

1. आत्मविश्वास की कमी – जब व्यक्ति स्वयं पर विश्वास नहीं करता, तो वह दूसरों के सामने अपनी बात रखने से कतराता है।
2. अतीत के अनुभव – यदि किसी ने पूर्व में उपहास या अस्वीकार का सामना किया हो, तो अगली बार वह सहज रूप से खुलने से डरता है।
3. परिवार और सामाजिक परिवेश – अत्यधिक अनुशासित या आलोचनात्मक वातावरण भी संकोच की भावना को जन्म देता है।
4. अत्यधिक आत्मचिंतन – जो लोग अपने बारे में अधिक सोचते हैं, वे अकसर यह सोचकर संकोच करते हैं कि लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे।

संकुचिता का प्रभाव

संकुचिता का सबसे बड़ा नुकसान यह होता है कि व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पाता। वह अवसरों को गंवा देता है, अपने विचारों को सामने नहीं रख पाता और कई बार अपनी योग्यता को भी छिपा लेता है। सामाजिक जीवन में भी संकोचपूर्ण व्यक्ति को समझ पाना कठिन होता है, जिससे उसके रिश्ते सीमित रह जाते हैं।

संकुचिता से उबरने के उपाय

1. आत्मस्वीकृति – खुद को स्वीकार करना और अपनी खूबियों को पहचानना आवश्यक है।
2. प्रयास और अभ्यास – सार्वजनिक रूप से बोलने का अभ्यास, छोटी बैठकों में भागीदारी से शुरू किया जा सकता है।
3. सकारात्मक सोच – नकारात्मक विचारों से बाहर निकलकर, सकारात्मक परिणाम की कल्पना करने से संकोच कम होता है।
4. समर्थन प्रणाली – परिवार या मित्रों से सहयोग लेना भी सहायक होता है।

संकुचिता एक स्वाभाविक मनोभाव हो सकता है, परंतु यदि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व या भविष्य की राह में बाधा बनने लगे तो इससे पार पाना आवश्यक हो जाता है। आत्मनिरीक्षण, अभ्यास और सकारात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से संकोच को दूर किया जा सकता है और एक स्वतंत्र, सशक्त व्यक्तित्व विकसित किया जा सकता है।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जो मन की झिझक को ,
पार कर लेता है...
वही जीवन की !
ऊँचाइयों को छू पाता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच - 197

चार थोय के जोड़े में तीसरी स्तुति कौनसी होती हैं ???

(1) 24 जिनेश्वर की
(2) एक जिनेश्वर की
(3) ज्ञान की
(4) देवी देवता की

प्रश्नमंच 196
जवाब (2)
ज्ञानावरणीय

विजेता : श्री जिग्नेश भाई वरलवाला

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

मार्मिक प्रश्नमंच 201 से ज्योतिष प्रवेशिका के माध्यम से प्रश्न दिया जायेगा जिसे पुस्तक चाहिए वह तुरंत संपर्क करें...₹ 200/-

आशीष: प.पू.आ. श्री रविदेव सूरीश्वरजी म.सा
अर्हम् साईट प्रकाशित

अर्हम् दैनिक

Arham Site
अर्हम् साईट
ता. 20. 5. 2025
मंगलवार
अंक : 50
वैशाख वद - 8

आनंदराज की कलम

" समय : सफलता की कुंजी "

समय का मूल्य समझो प्यारे , ये ना आए बार-बार रे।
बीता क्षण फिर लौट न आए , जो खो दे, वो पछताए।

घड़ी की टिक-टिक जो बोले , हर पल कुछ करने को टोके।
जो समय का करे इस्तेमाल , वो पाता है जीवन में कमाल।

आलस छोड़ो, उठो सुबह से , सपने बुनो मेहनत की राह से।
समय संग जो चलता जाता , सफलता खुद पास बुलाता।

समय वह अमूल्य निधि है जिसे न तो खरीदा जा सकता है और न ही वापस पाया जा सकता है। समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति सफलता की ऊँचाइयों को छूता है, जबकि समय को व्यर्थ गंवाने वाला केवल पछतावा ही प्राप्त करता है। इसीलिए कहा गया है – "समय ही जीवन है।"

समय का मूल्य पैसों से कहीं अधिक होता है। पैसा अगर चला जाए तो वापस आ सकता है, लेकिन एक बार बीता हुआ समय कभी लौट कर नहीं आता। छात्र जीवन में समय का विशेष महत्व होता है। जो विद्यार्थी समय का सही उपयोग करते हैं, वही भविष्य में आदर्श नागरिक बनते हैं।

समय का सम्मान करने का मतलब है – अनुशासन में रहना, कार्यों की योजना बनाकर उन्हें समय पर पूरा करना, और आलस्य से दूर रहना। इतिहास गवाह है कि महान व्यक्तियों ने समय का भरपूर उपयोग करके असंभव को संभव बना दिया ।जैसे गुरू गौतमस्वामी आदि....

जो लोग समय को हल्के में लेते हैं, वे धीरे-धीरे जीवन में पीछे रह जाते हैं। समय की अनदेखी से अवसर हाथ से निकल जाते हैं, और बाद में केवल पछतावा रह जाता है। इसीलिए भगवान महावीर का वाक्य याद रखें " समयं गोयम मा पमायए "

समय की कीमत को समझना और उसका सदुपयोग करना ही बुद्धिमत्ता है। एक-एक क्षण कीमती होता है, और उसका सही प्रयोग ही जीवन को सफल, सार्थक और संतुलित बनाता है। अतः हमें आज और अभी से ही अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

समय की !
कद्र करना सीखो...क्योंकि ,
यही सबसे बड़ा शिक्षक और ,
सबसे कठोर ,
न्यायाधीश होता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूरिजी

मार्मिक प्रश्नमंच – 198

किसी भी कार्य में कौनसा कर्म मुश्केली उत्पन्न करता है ???

(1) अंतराय कर्म
(2) आयुष्य कर्म
(3) मोहनीय कर्म
(4) दर्शनावरणीय कर्म

प्रश्नमंच 197
जवाब (3)
ज्ञान की

विजेता : श्री काजलबेन कृष्णनगर

जवाब 9428913847 पर whatsapp करें...
ड्रो द्वारा विजेता को नाम अर्हम् दैनिक में आयेगा एवं 13 ₹ ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131
arhamsite9@gmail.com

मार्मिक प्रश्नमंच 201 से ज्योतिष प्रवेशिका के माध्यम से प्रश्न दिया जायेगा जिसे पुस्तक चाहिए वह तुरंत संपर्क करें...₹ 200/-